Kaverya Ashtakam

कावेर्यष्टकम्

Document Information

Text title : kAveryaShTakam 2

File name : kAveryaShTakam2.itx

Category : aShTaka, devii, nadI, devI

Location : doc_devii

Proofread by : Prabha Maruvada

Description-comments : Kaveri Stuti Series No. 532 Thanjavur Sarasvati Mahal Series

Latest update : July 7, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

July 10, 2024

sanskritdocuments.org

Kaverya Ashtakam

कावेर्यष्टकम्

रङ्गत्रयोत्सङ्गविराजमाने-
ब्रह्माद्रिकूटाश्रिततीर्थगर्भे ।
समस्तसिद्धाश्रमरम्यतीर्थे
कावेरि कावेरि मम प्रसीद ॥ १॥

तुलागतेऽर्कैतटिनीपराभि-
गङ्गादिभिस्सेवितपादपद्मे ।
त्रिकोटितीर्थाश्रमपुष्कराढ्ये
कावेरि कावेरि मम प्रसीद ॥ २॥

ददासि कुल्याभिरनर्घधान्यान्
अशेषचोलीयजनस्य देवि ।
भुक्तिप्रदे मुक्तिविधानदक्षे-
कावेरि कावेरि मम प्रसीद ॥ ३॥

निजाभिधानश्रवणाहतानां-
निस्शेषपापक्षयकारिणी त्वम् ।
निदाघतृष्णादि निरासदक्षे-
कावेरि कावेरि मम प्रसीद ॥ ४॥

पराशरागस्त्यवसिष्ठमुख्यै -
महर्षिभिर्मान्यतपोभिरम्ब ।
त्वमाश्रिता कर्मठसिद्धिहेतुः
कावेरि कावेरि मम प्रसीद ॥ ५॥

मायूरमध्यार्जुनकुम्भघोण-
श्रीरङ्गचुञ्चुस्थलघट्टगात्वम् ।
सह्योद्भवे सिन्धुयुते स्वतन्त्रे
कावेरि कावेरि मम प्रसीद ॥ ६॥

ब्रह्मादिभिर्देववरैस्त्रिसन्ध्यं
वसिष्ठपूर्वैर्मुनिभिर्वरिष्ठैः ।
नित्यं गजारण्यगतैर्निषेव्ये
कावेरि कावेरि मम प्रसीद ॥ ७॥

सुवासिनीनां च निजाश्रितानां-
पतिप्रियत्वं च सुतादिवर्गम् ।
दास्यस्युदारं बहुभोगभाग्यं
कावेरि कावेरि मम प्रसीद ॥ ८॥

निजप्रवाहाप्लवलब्धपुण्य-
प्रसिद्धसत्कर्मफलोदयेन ।
नृणामभीष्टार्थविधायिनी त्वं
कावेरि कावेरि मम प्रसीद ॥ ९॥

इति कावेर्यष्टकं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Prabha Maruvada

Kaverya Ashtakam
pdf was typeset on July 10, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*